१.३.१ संस्था, संस्कृत साहित्य और शास्त्र परंपरा में स्त्री-पुरुष, पर्यावरण- स्थिरता - मानवीयूल्य- वृत्तिनीति-पारंपरिक शास्त्राधिगम प्रणालियों के साथ समकालीन विषयों के सर्वव्यापी भागों को एकीकृत करता है।

विश्वविद्यालय के शास्त्रीय पाठ्यक्रम में विभिन्न स्थलों में स्त्री -पुरुष स्थिरता, मानवीय मूल्यों और व्यवहारिक नैतिकता के अंश समाहित हैं। शास्त्रीय ग्रंथों में अंतः विषयकपद्धतियों का अनुसरण करते हुए आधुनिक विषयों का भी वैकल्पिकरूप में स्वतंत्रतया समावेश हैं तथा पारंपरिक पाठ्यक्रम में भी सभी प्रकार के पक्षों को समाविष्ट किया गया है ।

- पाठ्यक्रम में विविध स्थलों पर स्त्री पुरुष संतुलन विषयक पक्ष निर्धारित हैं। शास्त्री प्रथम वर्ष में ऋग्वेद पाठ्यक्रम के चतुर्थ प्रश्न पत्र में, ऋग्वेद संहिता के निर्धारित पाठ्यांश में वागाम्भृणी सूक्त तथा देवी सूक्त हैं, जो नारी शक्ति की दिव्य प्रकृति का वर्णन करता है। इसी प्रकार पुराण इतिहास पाठ्यक्रम के शास्त्री प्रथम वर्ष के पंचम प्रश्न पत्र में दुर्गासप्तशती निर्धारित है जिसमें स्त्रीशक्ति की अभिव्यक्ति विविध रूपों मे की गई है। ऋग्वेद संहिता के निर्धारित पाठ्यांश में यमयमी संवाद और शास्त्री के पाठ्यांश अभिज्ञानशाकुंतल में स्त्री और पुरुष के लिए व्यावहारिक नियमों का प्रतिपादन किया गया हैं। शुक्ल यजुर्वेद के पाठ्यक्रम में पुरुष सूक्त, धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में आचार्य द्वितीय वर्ष के प्रथमपत्र में पुरुषार्थचिंतामणि ग्रंथ और मनुस्मृति में स्त्रियों और पुरुषों के कर्तव्यों और दायित्वों का अनुपम प्रतिपादन है। पुराण इतिहास पाठ्यक्रम में, शास्त्री द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में, वाल्मीकि रामायण और महाभारत निर्धारित हैं जहां स्त्री और पुरुष से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है। सांख्य दर्शन में स्त्री-पुरुष के संबंध के आलोक प्रकृति और पुरुष के समन्वय का अध्ययन सांख्यकारिका एवं भगवद्गीता ग्रन्थ सांख्ययोग के पाठ्यक्रम का अंश हैं । न केवल स्त्री और पुरुष की, बल्कि बृहन्नला,शिखंडी जैसे पात्रों और संस्कृत साहित्य में समागत अन्य पात्रों के चरित्र का अध्ययन भी पाठ्यक्रम में निवेश सभी के प्रति समभाव का बोध करानें में सक्षम है।
- पर्यावरण चेतना पाठ्यक्रम में सर्वत्र विद्यमान है । शास्त्री प्रथम वर्ष के प्रथम पत्र में अनिवार्य रूप से अभिज्ञान शाकुंतल निर्धारित है, जहां या सृष्टिःस्रष्टुराद्या.... के मंगल पद्य से लेकर भरत वाक्य तक मानव स्वभाव से व्यंजित करते हुए पर्यावरण चेतना को वैज्ञानिक रूप से प्रतिपादित किया गया है। ज्योतिष शास्त्र विषयक पाठ्यक्रम फलितज्योतिष में आचार्य प्रथम वर्ष के तृतीय और चतुर्थ पत्र में बृहत् संहिता है, जिसमें भूगर्भ विज्ञान, जीव-धातु-रसायन विज्ञान आदि विषयों पर चर्चा और वास्तुशास्त्र से संबंधित वास्तुविद्याध्याय, पर्यावरण संबंधित विषय वृक्षायुर्वेद, सस्यलक्षणाध्याय,भूगर्भजल ज्ञान हेतु दकार्गलाध्याय का समावेश किया गया है। शास्त्रीद्वितीयवर्ष पुराण इतिहास के पंचम पत्र के पाठ्यक्रम में वाल्मीकि रामायण और महाभारत शामिल हैं, जहाँ रामायण में अयोध्याकांड और महाभारत में वनपर्व पाठ्यपुस्तक के रूप में पर्यावरण विषय शामिल हैं। शास्त्री स्तरीय फलिज्योतिष और सिद्धांतज्योतिष में निर्धारित सूर्यसिद्धांत और सिद्धान्तशिरोमणि में ब्रह्मांड के भौगोलिक स्वरूप का वर्णन पाठ्यांश के रूप में

निहित है। फलिज्योतिष में आचार्य प्रथम वर्ष के द्वितीय प्रश्नपत्र में वास्तुशास्त्र के ग्रंथ बृहदवस्तुमाला निर्धारित है जिसमें गृहप्रबंधन की विस्तृत चर्चा प्राप्त होती है। आभ्यन्तर और बाह्य पर्यावरण का परिवेश कैसा हो? ग्राह्य एवं त्याज्य वृक्ष कौन-कौन से हैं? किस प्रकार के वृक्ष को कैसे और कहाँ व्यवस्थित किया जाय इन विषयों के विचार से पर्यावरण जागरूकता विषय हर जगह पाठ्यक्रम में अंतर्निहित हैं।

- शास्त्री पाठ्यक्रम में स्थिरता विषय जैसे वेद, दर्शन, पुराण, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र पाठ्यक्रम में विषय हैं । वेद, धर्मशास्त्र,पौरोहित्य,दर्शन, साहित्यादि विषयों के पाठ्यांशों का मानव व्यवहार के साथ संबध हैं। भारतीयविद्या और संस्कृति के पाठ्यक्रम में श्रीमद्भागवत व श्रीमद्भगवतगीता निर्धारित हैं जिनमें समदुखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ इत्यादि प्रेरकांश मानव व्यवहार में धैर्य की अवधारणा को पुष्ट करते हुए स्थैर्यप्रदानपूर्वक मानव जीवन में धैर्य की भावना, स्थितप्रज्ञता, चतुर्वर्णसम्भाव और सभी के प्रति समान दृष्टिकोण को व्यक्त करती है। धर्मशास्त्र में आचार्य प्रथम वर्ष के प्रथम पत्र के व्यवहारमयूख में स्थिरता का वैशिष्ट्यप्रतिपादित है। योग विषय पर आधारित आचार्य पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के तृतीय प्रश्न पत्र में योगसूत्र को भाष्य सहित पूर्णपाठ्यांश में समाहित किया गया है और जिसमें यम, नियम,आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार,धारणा,ध्यान,समाधि के प्रयोग से मानव जीवन और व्यवहार स्थिरता के भाव को पुष्ट किया गया है। इसी प्रकार नीतिशास्त्र से संबंधित स्मृति ग्रंथ के पाठ्यांश मानवव्यवहार में स्थिरता का अवबोधन प्रदान करता है। संस्कृत साहित्य के पाठ्यांश में त्याज्यं न धैर्यं विधुरेपि काले इत्यादि वचनों के माध्यम से व्यवहार में नैतिकता व स्थिरता को पुष्ट करते हैं। शास्त्री प्रथम वर्ष के पंचमपत्र में वेदान्त विषय पर ईश, केन, कठ आदि उपनिषदों का सावेश है, जिनका मुख्य उद्देश्य धैर्य के गुणों को प्राप्त करके मनुष्य के चरित्र में सुधार करना है। धर्मशास्त्र में आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित याज्ञवल्क्यस्मृति सामाजिक व्यवहार सिखाती है, पुराणों में, श्रीमद्भगवदगीता के चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः आदि वचन समता की भावना व भारतीयविद्यासंस्कृति पाठ्यक्रम में निर्धारित वेदचयनम् विश्वेदेवसूक्त,पुरुषसूक्त व शिवसंकल्प सूक्त के माध्यम से सामाजिक ज्ञान की भावना को दृढ करता है ।

- संस्था में नीतिदर्शन विषय का एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शास्त्रीय पाठ्यक्रम में सर्वत्र मानवीय मूल्यों का समावेश किया गया है। सभी शास्त्रीय विषयों का मुख्य लक्ष्य मानवीयमूल्यों का परिवर्द्धन एवं परिष्करण ही है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव तथा वसुधैव कुटुम्बकम्, सहनाववतु सह नौ भुनक्तु, भद्रकर्णेभिः श्रृणुयामदेवाः आदि विषय वैदिक पाठ्यक्रम में समाहित हैं। धर्मशास्त्र के पाठ्यक्रम मनु स्मृति में स्त्री-पुरुष के बीच कर्तव्याकर्तव्यविवेक प्रतिपादित है। पुराण विषयक पाठ्यक्रम में परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् इत्यादि अंश परोपकार के विषय में अवबोधन प्रदान करते हैं । आचार्य कक्षा के साहित्य विषय के काव्य शाखा वर्ग में कादम्बरी को निहित किया गया है, जिसमें यौवनकाल के कर्त्तव्याकर्तव्य के विषय पतिपादित किए गए हैं। शाकुन्तलं में प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः शास्त्री पाठ्यक्रम में प्राचीन राजनीतिविज्ञान और अर्थशास्त्र पर एक स्वतंत्र स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम है, जिसमें कौटिलीय अर्थशास्त्र और कामन्दकीयनीतिसार जैसे मानवीय मूल्यों पर पाठ्यक्रम शामिल हैं। पुराण और इतिहास के पाठ्यक्रम में द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में वाल्मीकि

रामायण और महाभारत, धर्मशास्त्र की आचार्य कक्षा में मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित धर्मलक्षण में सभी मानवीय मूल्यों का परिगणन हुआ है । तुलनात्मक धर्म दर्शन के पाठ्यक्रम में पूर्वी और पश्चिमी धर्मों का समन्वय करते हुए मानवीय मूल्यों की नैतिकता पर बल दिया गया है।

- वृत्ति नीति विषय में क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? कैसे किया जाना चाहिए? कार्य से कैसे जुड़े रहें ? विषम परिस्थितियों में स्वभाव को स्थिर कैसे रख जाय?इस प्रकार वृत्तिनीति के विषय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में अंतर्निहित हैं। शास्त्री स्तर पर वेद दर्शन आदि पाठ्यक्रमों में तेन त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम, को समायोजित किया गया है। उपनिषदों में कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत्समाः..... न कर्म लिप्यते नरः इत्यादि वचन तथा पुराण इतिहास पाठ्यक्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में वाल्मीकि रामायण और महाभारत के अंश समाहित हैं जहाँ आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेदिति इत्यादि के माध्यम से वृत्ति व्यवहार निर्दिष्ट है। नीतिशास्त्र के पाठ्यांश में परद्रव्येषु लोष्ठवदिति व्यवहार भारतीय विद्यासंस्कृति के पाठ्यांश श्रीमद-भगवद्गीता मानव जीवन में वृत्तिनीति विषय पर हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् और स्वस्वकर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभते नरः वाक्यांशों के मानव सवभाव को उन्नत बनाते हैं । व्यवहारमयूख में वृत्तिनीति की भी विविध विशेषताएँ प्रस्तुत की गई हैं।

इस प्रकार यह संस्थान अपने पाठ्यक्रम में स्त्रीपुरुष, पर्यावरणीय स्थिरता, मानवीय मूल्य, नैतिक दृष्टिकोण, पारंपरिक शास्त्र अधिग्रहण प्रणालियों सहित समकालीन समस्याओं की सर्वव्यापक पक्षों को समाहित करता है, जो संस्कृत साहित्य और शास्त्र परंपरा में परिलक्षित होती हैं।

1.3.1 Q_IM संस्था, संस्कृतसाहित्ये शास्त्रपरम्परायां च प्रतिफलितान् स्त्रीपुरुष-पर्यावरण-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीति-पारम्परिकशास्त्राधिगम-प्रणालीसहितसमसामयिक समस्याविषयकान् सर्वत्रानुस्यूतांशान् पाठ्यचर्यायां समन्वयति।

विश्वविद्यालये शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु विविधस्थलेषु स्त्रीपुरूष-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीतिविषयकाः अंशाः निहितास्सन्ति । संस्कृतशास्त्रीयग्रन्थेषु च अन्तर्विषयिणीं पद्धतिमनुसृत्य आधुनिकविषयाणां समावेशः विद्यते । यथा विकल्पीयविषयेषु बहवः एतत्सम्पृक्ताः विषयाः छात्रेभ्यः प्रदत्ताः सन्ति । किंच पाराम्परिकपाठ्यक्रमेपि सर्वविधानां पक्षाणां निवेशः भवति ।

- पाठ्यचर्यायां बहुषु स्थलेषु स्त्रीपुरूषसंतुलनविषयकाः पक्षाः निर्धारितास्सन्ति । यथा ऋग्वेदविषयकपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे चतुर्थप्रश्नपत्रे ऋग्वेदसंहितायाः निर्धारिते पाठ्यांशे देवीसूक्तं विद्यते यत्र स्त्रीशक्तेः दिव्यं

स्वरूपं वर्णितमस्ति । तथैव पुराणेतिहासविषयकपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमप्रश्नपत्रे दुर्गासप्तशती निर्धारितास्ति । तत्रापि देव्याः व्यंजकत्वेन स्त्रीमाहात्म्यं विनिर्दिष्टमस्ति । ऋग्वेदसंहितायाः निर्धारिते पाठ्यांशे यमयमीसंवादः, अभिज्ञानशाकुन्तले स्त्रियाः पुरूषस्य च कृते व्यवहारनियमाः प्रतिपादितास्सन्ति । शुक्लयजुर्वेदस्य पाठ्यक्रमे पुरूषसूक्तम्, धर्मशास्त्रपाठ्यक्रमे आचार्यद्वितीयवर्षे प्रथमपत्रे पुरुषार्थचिन्तामणिग्रन्थे मनुस्मृतौ च स्त्रीपुरूषयोः कर्तव्याकर्तव्यविवेकः प्रतिपादितोस्ति । एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र स्त्रीपुरूषसम्बद्धाः विषयाः पाठ्यक्रमे अभिनिविष्टास्सन्ति । सांख्यदर्शने च प्रकृतिपुरुषयोः समन्वयेन स्त्रीपुरुषसम्बन्धः विज्ञाप्यत एव ।

- पाठ्यक्रमे सर्वत्र पर्यावरणचेतनाविषयकाः पक्षाः संपृक्तास्सन्ति । यथा शास्त्रिप्रथमवर्षे अनिवार्यतया प्रथमपत्रे अभिज्ञानशाकुंतलम् निहितमस्ति तत्र मंगलपद्यमारभ्य भरतवाक्यपर्यन्तं मानवप्रकृत्योः सम्बन्धः वैज्ञानिकतया प्रतिपादितः विद्यते । ज्योतिषविषयकपाठ्यक्रमे फलितज्योतिषे तु आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयचतुर्थपत्रे बृहत्संहिता विद्यते यत्र भूगर्भ-जीव-धातु-रसायनादिविषयाणां चर्चा वृक्षायुर्वेद-वास्तुशास्त्रसम्बद्धे कृषिपाराशरग्रन्थे पर्यावरणविषयाः स्पष्टतया प्रतिपादितास्सन्ति । एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च नियतं वर्तते यत्र रामायणे अयोध्याकाण्डे महाभारते वनपर्वणि पर्यावरणविषयाः पाठ्यांशरूपेण समाहितास्सन्ति । शास्त्रिस्तरे फलिज्यौतिषे सिद्धान्तज्यौतिषे च निर्धारिते सूर्यसिद्धान्ते सिद्धान्तशिरोमणौ च ब्रह्माण्डस्य भौगोलिकं स्वरूपं पाठ्यांशे निहितमस्ति। न केवलं स्त्रीपुरुषयोः अपितु महाभारते समागतानां बृहन्नलाशिखण्डीप्रभृतिचरित्राणां पाठ्यक्रमे निवेशेन तृतीयपक्षस्यापि अवबोधने पाठ्यक्रमः समर्थः विद्यते । फलिज्योतिषे आचार्यप्रथमवर्षे द्वितीयपत्रे वास्तुशास्त्रस्य ग्रन्थः बृहद्वास्तुमाला निर्धारितः विद्यते यत्र आवासीयप्रबन्धने कुत्र कस्यां दिशि गृहे आभ्यन्तरं बाह्यं च पर्यावरणं कीदृशं भवेत् ? बृहत्संहिताग्रंथे च केषां वृक्षाणां कथं विन्यासः भवतीति प्रबोधनं छात्रेभ्यो विधीयते । इत्थं सर्वत्र पर्यावरणचेतनाविषयाः पाठ्यक्रमे निहितास्सन्तिः।
- शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु स्थिरताविषये वेदे- दर्शने- पुराणे -धर्मशास्त्रे नीतिशास्त्रीयपाठ्यक्रमे च विषयाः वर्तन्ते । वेद-धर्मशास्त्र-पौरोहित्य-दर्शन-साहित्यादिविषयेषु पाठ्यांशाः मानवव्यवहारस्थैर्यसम्बद्धा एव । भारतीयविद्यासंस्कृतिपाठ्यक्रमे श्रीमद्भगवद्गीता मानवजीवने स्थैर्यस्य चर्चां स्थितप्रज्ञरूपेण विदधाति किं च चतुर्वणसमभावं सर्वेषां समदर्शनं च व्यंजयति । धर्मशास्त्रे आचार्यप्रथमवर्षस्य प्रथमपत्रे व्यवहारमयूखे

स्थिरतायाः वैशिष्ट्यं प्रतिपादितं विद्यते । योगविषयकपाठ्यक्रमे आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयप्रश्नपत्रे योगसूत्रं सभाष्यं पाठ्यांशे सम्पृक्तमस्ति । तत्र च यमनियमादीनां विनियोगेन मानवजीवने व्यवहारे च कथं स्थैर्यं साधनीयमिति कूर्मनाड्यां स्थैर्यमिति ससूत्रं विषयाः निहितास्सन्ति । एवमेव नीतिसम्बद्धाः स्मृतिग्रन्थाः मनुस्मृति-आचारशुद्धिप्रभृतयः पाठ्यंशाः मानव्यवहारे स्थिरतां पोषयन्ति। संस्कृतसाहित्यपाठ्यक्रमे किरातार्जुनीय- शिशुपालवध-अभिज्ञानशाकुन्तल-भर्तृहरिशतकानां निवेशः मानवव्यवहारनीतौ स्थिरतां विकासयति । तत्र वेदान्तविषये शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमपत्रे ईशकेनकठादि-उपनिषदः निर्धारिताः येषां मुख्यमुद्देश्यं मानवस्य स्थैर्यगुणसम्पादनपूर्वकं चारित्रिकमुत्थानमेव । धर्मशास्त्रे आचार्यपाठ्यक्रमे याज्ञवल्क्यस्मृतिः आचार्यपाठ्यक्रमे सामाजिकव्यवहारं बोधयति तथैव पुराणे श्रीमद्भगवद्गीता च वर्णव्यवस्थाविषये, दुर्गासप्तशती भारतीयविद्यासंसकृतिविषये वेदचयनम् इति पाठ्यांशे विश्वेदेव-पुरूष-शिवसंकल्पसूक्तानां माध्यमेन सामाजिकं प्रबोधनं कृतं विद्यते ।

- भारतीयज्ञानपरम्परायां शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु सर्वत्र मानवीयमूल्यानां समावेशः विद्यते । सर्वेषां शास्त्रीयविषयाणां मुख्यं लक्ष्यं मानवीयमूल्यानां परिषोणमेव । तत्र मातृदेवो भव,पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, वसुधैवकुटुम्बकम् प्रभृतयः विषयाः वैदिकपाठ्यक्रमे सन्निविष्टास्सन्ति । नीतिदर्शनम् इतिविषयकः स्वतन्त्रकार्यक्रमोपि संस्थया प्रचाल्यते । धर्मशास्त्रपाठ्यक्रमे मनुस्मृतौ च स्त्रीपुरूषयोः कर्तव्याकर्तव्यविवेकः प्रतिपादितोस्ति । पुराणविषयकपाठ्यक्रमे तु परोपकारविषये यथा वर्णितं तथैव मूलपाठ्यांशरूपेण शास्त्रिस्तरे आर्चायस्तरे च पुराणविषये सन्निहितो विद्यते । आचार्यकक्षायां साहित्यविषये काव्यशाखायां कादम्बरी निर्धारिता यत्र युवनीतिविषयाणामुल्लेखः कृतोस्ति । एवमेव शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्रविषयकः स्वतन्त्रतया स्नातक-स्नातकोत्तरोपाधिकार्यक्रमः विद्यते यत्र कौटिलीयार्थशास्त्रम्, कामन्दकीयनीतिसारप्रभृतयः मानवीयमूल्यसम्बद्धाः पाठ्यंशाः सम्बद्धास्सन्ति । पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र च स्वकर्तव्यविषयेदयानीतिविषयाः पाठ्यक्रमे अभिनिविष्टास्सन्ति । धर्मशास्त्रे आचार्यकक्षायां मनुस्मृतौ धर्मलक्षणे सर्वेषां मानवीयमूल्यानामेव परिगणना कृतास्ति । तुलनात्मकधर्मदर्शने सर्वेषां प्राच्यपाश्चात्यधर्मावलम्बिनां अध्ययनं मानवीयमूल्यनीतिं च विकासयति ।
    - वत्तिनीतिविषये तु किं कर्तव्यम्? किं वा न कर्तव्यम् ? कथं कर्तव्यम् ? कर्मणि आसक्तता कीदृग् भवेदिति वृत्तिनीतिविषयाः सर्वत्र पाठ्यक्रमे निहितास्सन्ति । तच्च शास्त्रिस्तरे वेददर्शनादिपाठ्यक्रमेषु तेन

त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्, एतादृशाःवत्तिनीतिविषयकाः पक्षाः समायोजितास्सन्ति। एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेदिति वृत्तिव्यवहारः निर्दिष्टोस्ति। नीतिशास्त्रे च पाठ्यांशे परद्रव्येषुलोष्ठवदिति व्यवहारांशः अपि पाठ्यक्रमे विहितः वर्तते । भारतीयविद्यासंस्कृतिपाठ्यक्रमे श्रीमद्भगवद्गीता मानवजीवने वृत्तिनीतिविषये हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् तथा च स्वस्वकर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभते नरः इति वाक्यांशैः विदधाति चतुर्वणसमभावं सर्वेषां समदर्शनं च व्यंजयति । धर्मशास्त्रे आचार्यप्रथमवर्षस्य प्रथमपत्रे व्यवहारमयूखे वृत्तिनीतिविषये अन्यदपि वैशिष्ट्यं प्रतिपादितं विद्यते ।

इत्थं संस्था, संस्कृतसाहित्ये शास्त्रपरम्परायां च प्रतिफलितान् स्त्रीपुरुष-पर्यावरण-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीति-पारम्परिकशास्त्राधिगम-प्रणालीसहितसमसामयिक समस्याविषयकान् सर्वत्रानुस्यूतांशान् पाठ्यचर्यायां समन्वयति।